ICT पाठ्यवस्तु निर्माण

भारत में कृषि

इस अध्यनन का उद्देश्य भारत में कृषि के विभिन्न प्रारूपों को समझना और देश में बोयी जाने वाली विभिन्न प्रकार की फसलों के बारे में जानकारी देना है |

अजय सिंह गोबाडी
11/18/2017

कृषि

कृषि एक बहु प्रचलित व्यवसाय है जिससे संसार की सम्पूर्ण जनसँख्या के भरण पोषण हेतु भोजन की प्राप्ति होती है,कृषि फसलें खाद्य फसलों और औद्योगिक फसलों के रूप में वर्गीकृत की जाती हैं,विश्व की करीब 50 प्रतिशत जनसँख्या कृषि कार्य में लगी है,कृषि जनसँख्या का अधिकाँश भाग विकासशील तथा अविकसित देशों में ही पाया जाता है|

कृषि की शुरुआत करीब 4000 वर्ष पहले हुई थी और उस समय से लेकर अब तक कृषि अनेक रूपों में परिवर्तित हुई है | इस परिवर्तन के प्रमुख कारण हैं - जलवायु की विभिन्नता , मिट्टी की उर्वरता ,भूमि का स्वामित्व ,श्रम बाजार ,सिंचाई के साधन आदि|

कृषि की दृष्टि से भारत एक महत्वपूर्ण देश है , इसकी दो तिहाई जनसँख्या कृषि कार्यों में संलग्न है यह एक प्राथमिक क्रिया है जो हमारे लिए अधिकाँश खाद्यान उत्पन्न करती है |

कृषि के प्रकार :-

कृषि हमारे देश की प्राचीन आर्थिक क्रिया है , पिछले अनेक वर्षों के दौरान इसकी विधियों में सार्थक परिवर्तन हुआ है , वर्तमान समय में भारत के विभिन्न भागों में निम्न प्रकार के कृषि तंत्र अपनाए गए हैं |

➢ प्रारम्भिक जीविका निर्वाह कृषि

यह कृषि का सबसे प्राचीन रूप है, यह अधिकतर उष्ण कटिबंधीय वनों में रहने वाले लोगों द्वारा की जाती है इसमें वन के छोटे भूभाग को आग लगाकर वृक्षों और झाड़ियों को जला दिया जाता है जिससे वन भूमि साफ हो जाती है और कुछ वर्षों तक कृषि की जाती है | भूमि की उर्वरता ख़त्म हो जाने पर उसे छोडकर दूसरी जगह पर यही क्रिया दोहराई जाती है इसी वजह से इसे काटना और जलाना या बुश फेलो कृषि भी कहा जाता है , विश्व के अलग अलग भागों में इसके अलग अलग नाम हैं |

नाम	क्षेत्र
लदांग	इंडोनेशिया
तुन्ग्या	म्यांमार
कैंगिन	फिलीपींस
चेन्ना	श्रीलंका
रोका	ब्राजील

मिल्पा	मैक्सिको और मध्य अमेरिका

इस प्रकार की कृषि भारत के कुछ भागों में अभी भी की जाती है , उत्तर पूर्वी राज्यों असम , मेघालय, मिजोरम और नागालैंड में इसे 'झूम' कहा जाता है , मणिपुर में 'पामलू' और छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले और अंडमान निकोबार द्वीप समूह में इसे 'दीपा' , झारखंड में 'कुरुवा' मध्य प्रदेश में 'वेबर या दहिया'कहा जाता है |

- **<u>गहन जीविका कृषि</u>**

इस प्रकार की कृषि उन क्षेत्रों में की जाती है जहां भूमि पर जनसँख्या का दबाव अधिक होता है| यह श्रम गहन खेती है जहाँ अधिक उत्पादन के लिए अधिक मात्रा में रासायनिक खादों का प्रयोग किया जाता है ,इस कृषि में तेज गति से बढती जनसँख्या के भोजन की पूर्ति के लिए उपस्थित भूमि का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है |

- **<u>वाणिज्यिक कृषि</u>**

इस प्रकार की कृषि के मुख्य लक्षण आधुनिक निवेशों जैसे अधिक पैदावार देने वाले बीजों, रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से उच्च पैदावार प्राप्त करना है | कृषि के वाणिज्यिकी करण का स्तर विभिन्न प्रदेशों में अलग अलग है |

- **<u>रोपण या बागानी कृषि</u>**

रोपण कृषि भी एक प्रकार की वाणिज्यिक खेती ही है, यह कृषि का बहुत ही विशेष रूप है इसके अन्तर्गत सैकड़ों हेक्टेयर भूमि में कहवा,चाय,मसाले,और रबड़ की फसलें पैदा की जाती हैं,इन फसलों को मुख्य रूप से निर्यात के लिए ही उगाया जाता है | इस कृषि में बहुत भारी मात्रा में पूँजी लगायी जाती है और बहुत बड़ी संख्या में श्रमिकों की जरुरत होती है, भारत में चाय, कॉफ़ी ,रबड़ ,गन्ना ,केला आदि महत्वपूर्ण रोपण फसलें हैं, चूंकि इस प्रकार की कृषि में उत्पादन बिक्री के लिए होता है इसलिए इसके विकास में परिवहन और संचार के साधनों और बाजार का महत्वपूर्ण योगदान है |

- **<u>मिश्रित कृषि</u>**

इस प्रकार की कृषि में कृषि कार्यों के साथ साथ पशुपालन का कार्य भी किया जाता है, इस कृषि का सम्बन्ध सघन जनसँख्या वाले क्षेत्रों से है जिसमें किसान अपनी आय बढाने के लिए कृषि के साथ साथ आधुनिक ढंग से पशुपालन भी करता है |

भारत में फसलों के प्रकार :-

हमारे देश में चावल,गन्ना,तम्बाकू आदि उष्ण कटिबंधीय जलवायु की फसलें तथा कपास गेहूं आदि समशीतोष्ण जलवायु की फसलें दोनों ही पैदा की जाती हैं | भारतीय कृषि वर्ष में तीन शस्य मौसम पाए जाते हैं जिन्हें खरीफ, रबी तथा जायद कहते हैं |

➢ खरीफ

खरीफ का मौसम मानसून के आरम्भ होते ही जून जुलाई के महीने में शुरू हो जाता है,इस मौसम की मुख्य फसलें चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा, कपास, तिल ,मूंगफली तथा कुछ दालें जैसे मूंग, उड़द आदि हैं | इन फसलों को अधिकतम तापमान तथा अपेक्षाकृत अधिक नमी की जरुरत होती है, ये फसलें पूरे देश में मानसून के आगमन के साथ बोई जाती हैं और सितम्बर -अक्टूबर के महीने में काट ली जाती हैं|

➢ रबी

खरीफ का मौसम समाप्त होने के पश्चात रबी का मौसम शुरू होता है | यह शीतऋतु के अनुरूप रहता है और इसकी फसलें अक्टूबर तथा नवम्बर के मध्य में बोई जाती हैं तथा मार्च अप्रैल के मध्य में काट ली जाती हैं, इस मौसम में वे फसलें उगाई जाती हैं जो कम तापमान तथा कम वर्षा में पनप सकती हैं ,इस मौसम की मुख्य फसलें गेहूं, जौ, ज्वार, चना, तिलहन जैसे अलसी, सरसों आदि हैं| शीत ऋतु में शीतोष्ण पश्चिमी विक्षोभ से होने वाली वर्षा इन फसलों के अधिक उत्पादन में सहायक होती है |

➢ जायद

रबी और खरीफ फसलों के बीच ग्रीष्म ऋतु में बोई जाने वाली फसल को जायद कहा जाता है, यह ग्रीष्म कालीन शस्य मौसम है इसमें फसलों की बुवाई मार्च में की जाती है तथा मई जून के मध्य में कटाई की जाती है, इसमें सब्जियां, खरबूज, तरबूज, ककड़ी, खीरा, लौकी आदि पैदा की जाती हैं|

भारत की मुख्य फसलें

मिट्टी, जलवायु और कृषि प्रणालियों में अंतर के कारण देश के विभिन्न क्षेत्रों में अनेक प्रकार की खाद्य और अखाद्य फसलें उगाई जाती हैं | भारत में उगाई जाने वाली मुख्य फसलें - चावल, गेहूं, मोटे अनाज, दालें ,चाय, कॉफ़ी, गन्ना, तिलहन, कपास और जूट आदि हैं |

➢ चावल

भारत में चावल एक महत्वपूर्ण फसल है यहाँ अधिकाँश लोगों का भोजन चावल है ,भारत में विश्व के चावल के कुल उत्पादन का लगभग एक तिहाई चावल उत्पन्न होता है, भारत, चीन के बाद विश्व का दूसरा सबसे बड़ा चावल उत्पादक देश है | चावल की खेती के लिए निम्न भौगोलिक दशाओं की आवश्यकता होती है

1- चावल एक उष्ण कटिबंधीय फसल है |

2- इसके लिए चिकनी उपजाउ मिट्टी तथा गर्म जलवायु की आवश्यकता होती है |

3- चावल के लिए १०० से २०० सेंटीमीटर वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है |

4- फसल को बोते समय 20 से 25 डिग्री सेल्सियस तथा पकते समय 27 डिग्री सेल्सियस तापमान की आवश्यकता होती है|

5- अच्छी फसल के लिए कम वर्षा वाले क्षेत्रों में इसे सिंचाई करके उगाया जाता है |

भारत में चावल उत्तर और उत्तर पूर्वी मैदानों , तटीय क्षेत्रों और डेल्टाई प्रदेशों में उगाया जाता है, भारत के विभिन्न राज्यों में उगाये जाने वाले चावल की कुछ विशेष किस्में हैं जिन्हें अलग अलग राज्यों में अलग अलग नामों से जाना जाता है , इन्हें केरल में चम्पाबू, मध्यप्रदेश में दिल पसंद और हीरानकी ,महाराष्ट्र में आंबे मोहर , पश्चिम बंगाल में कामिनी और उत्तर प्रदेश में बासमती के नाम से जाना जाता है| भारत में चावल मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल, उत्तरप्रदेश, बिहार ,तमिलनाडु, छत्तीसगढ और आंध्र प्रदेश में उगाया जाता है |

➢ गेहूँ

गेहूँ भारत की दूसरी सबसे महत्वपूर्ण फसल है, जो क्षेत्रफल और उत्पादन के सन्दर्भ में चावल के बाद दूसरी सबसे महत्वपूर्ण फसल है | पूरे देश के कुल 10 प्रतिशत भाग पर गेहूँ की कृषि की जाती है, यह फसल देश के उत्तर और उत्तर पश्चिमी भाग में पैदा की जाती है| गेहूँ की खेती के लिए निम्न आदर्श दशाओं की आवश्यकता होती है

1- गेहूँ रबी की फसल है |

2- गेहूँ की फसल को उगाने के लिए शीत ऋतु और पकने के समय खिली धूप की आवश्यकता होती है |

3- गेहूँ की फसल को उगाने के लिए 50 से 75 सेंटीमीटर वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है |

4- गेहूँ की फसल के लिए प्रारंभ में 10 डिग्री सेल्सियस से 15 डिग्री सेल्सियस तापमान और बाद में 20 डिग्री सेल्सियस से 25 डिग्री सेल्सियस तापमान की जरुरत होती है |

भारत में गेहूं उगाने वाले दो मुख्य क्षेत्र हैं - उत्तर पश्चिम में गंगा सतलुज का मैदान और दक्कन का काली मिट्टी वाला प्रदेश | भारत में हरित क्रांति का सबसे अधिक प्रभाव गेहूं पर पड़ा है , देश में कुल गेहूं उत्पादन का अधिकाँश भाग पंजाब, हरियाणा तथा उत्तरप्रदेश से प्राप्त होता है, भारत में गेहूँ के मुख्य उत्पादक राज्य पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश , बिहार , उत्तराखंड, राजस्थान और मध्यप्रदेश हैं |

मोटे अनाज :-

मोटे अनाजों में मक्का , ज्वार , बाजरा और जौ शामिल किये जाते हैं | देश के लगभग 360 लाख हेक्टेयर भूमि पर मोटे अनाज की खेती की जाती है |

- **ज्वार :-**

  ज्वार खरीफ और रबी की फसल के रूप में सामान्य वर्षा वाले क्षेत्रों में बगैर सिंचाई के उत्पन्न की जाती है | इस फसल के लिए जलोढ़ या चिकनी मिट्टी अच्छी होती है |
  महाराष्ट्र देश का सबसे बड़ा ज्वार उत्पादन करने वाला राज्य है | इसने सन १९८७-१९८८ मैं देश मैं ज्वार बोये गए कुल क्षेत्रफल के 42% भाग का योगदान दिया |

- **बाजरा :-**

  यह ज्वार से भी अधिक शुष्क परिस्थितियों में पैदा किया जाता है | इसके लिए बलुई मिट्टी , 50 सेंटीमीटर से 60 सेंटीमीटर तक वर्षा तथा 30 से 35 डिग्री सेल्सिअस तापमान की जरुरत होती है | राजस्थान , मध्यप्रदेश , महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश , दक्षिणी हरियाणा में बाजरा व्यापक रूप से उत्पन्न किया जाता है | यह एक अति पुष्ट शस्य है , और शुष्क क्षेत्रों मैं, जहाँ नमी बहुत कम पायी जाती है , सफलता पूर्वक उत्पन्न की जाती है | इसके उत्पादन में राजस्थान ने 25% का योगदान कर पहला स्थान लिया है | इसके बाद गुजरात, उत्तरप्रदेश , महाराष्ट्र का स्थान आता है |

- **मक्का :-**

  इस फसल के लिए नाइट्रोजन युक्त दोमट मिट्टी , 50 से 100 सेंटीमीटर तक की वर्षा , तथा 25 से 30 डिग्री सेल्सिअस तापमान की जरुरत होती है | इसके अलावा लम्बी गर्मी का मौसम तथा खुले आकाश की जरुरत होती है | पूर्वी राजस्थान , उत्तरप्रदेश , बिहार , पंजाब तथा पर्वतीय प्रदेशों जैसे जम्मू कश्मीर तथा हिमांचल प्रदेश में मक्का एक महत्वपूर्ण फसल है|

दालें :-

देश के मुख्यतः शाकाहारी जनसँख्या के आहार में दालें प्रोटीन का मुख्य श्रोत हैं | इन फसलों के लिए क्रमशः उपजाऊ मिट्टी , 30 से 50 सेंटीमीटर वर्षा तथा 15 से 25 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की जरुरत होती है |

मध्यप्रदेश , राजस्थान, उत्तरप्रदेश , महाराष्ट्र , बिहार, हरियाणा , आंध्रप्रदेश , तमिलनाडु तथा पश्चिमी बंगाल में दालों की कृषि व्यापक रूप से की जाती है |

दालें खरीफ तथा रबी दोनों ऋतुओं में उगाई जाती हैं | अरहर, मूंग, मोठ, आदि खरीफ की फसलें हैं जबकि चना , मटर, रबी की फसलें हैं | अरहर, उत्तरप्रदेश , कर्नाटक, गुजरात और तमिलनाडु में उगाई जाने वाली प्रमुख फसल हैं और चना, बिहार , हरियाणा , मध्यप्रदेश , उत्तरप्रदेश ,राजस्थान, मध्यप्रदेश में दालों की प्रमुख फसल मानी जाती है |

तिलहन :-

तिलहन के लिए उपजाऊ मिट्टी, गर्म तथा आर्द जलवायु की जरुरत होती है | यह वास्तव में दस अलग अलग बीजों का समुच्चय है | इन बीजों के नाम इस प्रकार हैं - मूंगफली, अरंड , तिल , तोरिया, सरसों, अलसी, नाइज़र सीड, कुसुम, सूर्यमुखी तथा सोयाबीन | इसके अलावा नारियल, बिनौला , से खाद्य तेल प्राप्त किया जाता है |

गुजरात तिलहन का उत्पादन करने वाला सबसे बड़ा राज्य है | इसके बाद आंध्रप्रदेश और उत्तर प्रदेश का स्थान है | मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान ,कर्नाटक और तमिलनाडु भी तिलहन उत्पन्न करने वाले महत्वपूर्ण राज्य हैं |

मूंगफली :-

इस फसल के लिए 15 से 25 डिग्री तापमान , 75 से 125 सेंटीमीटर तक वर्षा तथा हल्की रेतीली मिट्टी की आवश्यकता होती है | इसके उत्पादक राज्य हैं - गुजरात, आंध्रप्रदेश , तमिलनाडु, कर्नाटक , महाराष्ट्र तथा मध्यप्रदेश | भारत का मूंगफली उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान है |

गन्ना :-

गन्ना देश के उष्णकटिबंधीय तथा उपोष्ण कटिबंधीय दोनों प्रदेशों में उत्पन्न किया जाता है | दक्षिण में कन्याकुमारी से लेकर उत्तर में पंजाब तक पैदा किया जाता है | गन्ना एक ऐसी फसल है जिसे उर्वरक की आवश्यकता रहती है , इसलिए यह उपजाऊ भूमि पर भली भांति उत्पन्न होता है | इसके लिए चूना युक्त चिकनी दोमट मिट्टी उपयुक्त रहती है | इसके लिए 20 से 27 डिग्री सेल्सिअस का उच्च तापमान तथा लगभग 100 सेंटीमीटर वर्षा आवश्यक है | जिन क्षेत्रों मे कम वर्षा होती है वहां सिंचाई करना अनिवार्य होता है| तुषार हीन दशाओं के अन्तर्गत यह बहुत अच्छी तरह से उत्पन्न होता है | उत्तरप्रदेश गन्ना उत्पन्न करने वाला सबसे बड़ा राज्य है | यह देश के लगभग 40% गन्ने का उत्पादन करता है |

कपास :-

कपास उन क्षेत्रों में उत्पन्न होती है जहाँ सुअपवाहित गहरी मृदा पायी जाती है और पौंधे बड़ते समय की अवधि में समान रूप से वितरित हल्की वर्षा या सिंचाई द्वारा जल उपलब्ध हो जाता है तथा कपास चुनने के समय तेज धूप रहती है |

कपास के लिए पाला बहुत हानिकारक होता है , इसीलिए यह उन प्रदेशों में उत्पन्न की जाती है जहाँ उसकी वृद्धि की अवधि में 21 डिग्री सेल्सिअस से अधिक तापमान रहता है | लगभग 200 दिन की पाला तथा ओला रहित अवधि , तेज धूप की भी जरुरत होती है | इसके लिए 50 से 100 सेंटीमीटर तक की वर्षा की जरुरत होती है | दक्षिणी पठार के काली मृदा वाले तथा शुष्क भागों में कपास विशेष रूप से उत्पन्न होती है |

महाराष्ट्र , मध्यप्रदेश के आसन्न क्षेत्र तथा गुजरात में यह विस्तृत रूप से उत्पन्न की जाती है | उत्तर में पंजाब, हरियाणा और राजस्थान, तथा दक्षिण में तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश तथा कर्नाटक दूसरे महत्वपूर्ण कपास उत्पन्न करने वाले राज्य हैं |

महाराष्ट्र , गुजरात तथा मध्यप्रदेश मिलकर भारत के कुल उत्पादन का 50% से भी अधिक कपास का उत्पादन करते हैं |

जूट :-

जूट उस प्रदेश में उत्पन्न किया जाता है जहाँ भारी वर्षा होती है और उच्च तापमान रहता है | इस फसल के लिए दोमट मिट्टी , 25 डिग्री से 35 डिग्री सेल्सिअस तक तापमान तथा 100 से 200 सेंटीमीटर तक वर्षा की जरुरत होती है | इसकी कृषि पूर्वी भारत में पश्चिमी बंगाल , असम , बिहार, ओडिशा तथा पूर्वी उत्तरप्रदेश में की जाती है | पश्चिमी बंगाल जूट का प्रमुख उत्पादक राज्य है |

रबर :-

रबर की खेती के लिए 30 से 35 डिग्री सेल्सिअस तापमान , 150 से 250 सेंटीमीटर तक वर्षा, तथा लाल लेटराइट चिकनी तथा दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है | इसमें पेड़ों से रस निकालने के लिए मानव श्रम की जरुरत होती है | केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक तथा अंडमान निकोबार द्वीप समूह में रबर मुख्य रूप से पैदा होता है क्योंकि यहाँ रबर की कृषि के लिए उपयुक्त दशाएं हैं | भारत का लगभग 90% रबर केरल मैं पैदा होता है |

चाय :-

हमारा देश विश्व में चाय उत्पन्न करने वाला सबसे बड़ा देश है | चाय एक उष्ण आर्द्र जलवायु की फसल है | इसकी खेती पहाड़ों के ढाल पर की जाती है | इसकी फसल के लिए 23 से 30 डिग्री सेल्सिअस के ऊँचे तापमान की आवश्यकता होती है | वर्षा 150 से 200 सेंटीमीटर के बीच में होनी चाहिए |

भारत में चाय की खेती असम की ब्रह्मपुत्र घाटी में प्रारम्भ हुई थी | अब यहाँ देश के कुल उत्पादन का लगभग 45% चाय उत्पन्न होती है | यहाँ की सुरमा घाटी में भी चाय का उत्पादन होता है|

पश्चिमी बंगाल के उत्तरी जिलों जैसे दार्जिलिंग , जलपाईगुड़ी , और कूचबिहार महत्वपूर्ण चाय उत्पादक क्षेत्र हैं | चाय के कुछ बागान हिमांचल प्रदेश की काँगड़ा और कुल्लू घाटी , उत्तराखंड के अल्मोड़ा तथा नैनीताल जिलों की पहाड़ियों पर विकसित किये गए हैं |

दक्षिण भारत के नीलगिरी तथा पश्चिमी घाट के क्षेत्रों में चाय के खेती के लिए आदर्श दशाएं पायी जाती हैं | यहाँ पर तमिलनाडु चाय का सबसे ज्यादा उत्पादन करने वाला राज्य है |

कृषि का राष्ट्रीय अर्थव्यस्था रोजगार और उत्पादन में योगदान :-

प्राचीन काल से ही कृषि भारतीय अर्थव्यस्था की धुरी रही है, भारत की अधिकाँश जनसँख्या जो गांवों में रहती है, अपनी आजीविका के लिए मुख्य रूप से कृषि पर ही निर्भर है | देश के सकल घरेलू

उत्पाद में कृषि के योगदान का अनुपात १९५१ से लगातार घटने के बाद भी यह देश की आधी से अधिक आबादी के लिए रोजगार और आजीविका का मुख्य साधन है|

कृषि के महत्व को समझते हुए भारत सरकार ने समय समय पर इसको आधुनिक बनाने के प्रयत्न किये हैं | भारतीय कृषि में सुधार के लिए भारत सरकार द्वारा भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान पूसा, और कृषि विश्व विद्यालयों की स्थापना की गयी है तथा १९६० के दशक की शुरुवात में डॉ एम एस स्वामी नाथन द्वारा भारत में हरित क्रांति को सफल बनाया गया जिसने पंजाब, हरियाणा और उत्तरप्रदेश जैसे राज्यों में खाद्यान्नों के उत्पादन में आशातीत बढोतरी की है, कृषि के क्षेत्र में इस अभूतपूर्व योगदान को देखते हुए डॉ एम एस स्वामीनाथन को भारत में हरित क्रांति का जनक भी कहा गया | (हरित क्रांति का जनक नार्मन एस बोरलोग को कहा जाता है लेकिन भारत में हरित क्रांति का जनक डॉ एम एस स्वामीनाथन को कहा जाता है)

वर्तमान में भी सरकार का प्रयास है की कृषि क्षेत्र को विकसित किया जाये जिसके लिए सरकार द्वारा किसानों को समस्त सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं और इन प्रयासों के परिणाम स्वरुप भारत कृषि के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनता चला जा रहा है |

खाद्य सुरक्षा :-

खाद्य सुरक्षा का अर्थ खाद्य पदार्थों की सुनिश्चित आपूर्ति एवम जनसामान्य की भोज्य पदार्थों की उपलब्धता से है ,भोजन एक आधारभूत आवश्यकता है और देश के प्रत्येक नागरिक को ऐसा भोजन मिलना चाहिए जो न्यूनतम पोषण स्तर प्रदान करे ,यदि जनसँख्या के किसी भाग को यह प्राप्त नहीं होता है तो उसे खाद्य सुरक्षा प्राप्त नहीं है |

खाद्य सुरक्षा का मतलब है समाज के सभी नागरिकों के लिए जीवनचक्र में पूरे समय पर्याप्त मात्रा में विविधता पूर्ण भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित करना, इसके लिए हमारी सरकार ने निम्न कार्य किये हैं -

1- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा प्रणाली की रचना की है |

२- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा प्रणाली के अन्तर्गत बफर स्टाक और सार्वजनिक वितरण प्रणाली की स्थापना की गयी है |

३- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम २०१३ पारित किया गया है |

4- खाद्यानों की अधिक प्राप्ति और भण्डारण के लिए भारतीय खाद्य निगम की स्थापना की गयी है|

5- खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उपभोक्ताओं को दो वर्गों ए पी एल और बी पी एल में बांटा गया है |

भारतीय कृषि पर वैश्वीकरण का प्रभाव

भारतीय कृषि सदा से ही विश्व के अनेक देशों को अपनी तरफ आकर्षित करती रही है , औपनिवेशिक काल में भी भारतीय मसालों, कपास और अन्य कृषि उत्पादों ने यूरोपीय व्यापारियों को अपनी तरफ आकर्षित किया | वैश्वीकरण का अर्थ एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिया किया जाता है जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते हैं तथा एक साथ कार्य करते हैं, वैश्वीकरण सामान्य रूप में अंतर्राष्ट्रीय बाजारों की अर्थव्यस्था है |

वैश्वीकरण की वजह से भारतीय किसानों को विश्व के अन्य देशों के साथ प्रतिस्पर्धा करनी पड़ रही है, विदेशों के किसान उन्नत तकनीक एवम अच्छी किस्म के बीजों का उपयोग कर अपनी उत्पादकता को बढ़ाते जा रहे हैं लेकिन भारत में किसान इन सुविधाओं के अभाव में विदेशों से स्पर्धा करने में असमर्थ हैं , जिस कारण भारतीय कृषि लगातार पिछड़ती चली जा रही है |

पिछले कुछ समय से सरकार के द्वारा कृषि को प्रोत्साहन दिए जाने का प्रयास किया जा रहा है तथा किसानों को आर्थिक सहायता, अच्छे बीज तथा खेती के नवीनतम तौर तरीकों से परिचित कराया जा रहा है जिसके भविष्य में सार्थक परिणाम होने की उम्मीद है |

कृषि उत्पादन में वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा उठाये गए कदम

भारत सरकार के द्वारा कृषि में वृद्धि सुनिश्चित करने के लिए निम्न प्रयास किये गए हैं -

1- किसानों को अच्छे किस्म के कृषि यंत्र उपलब्ध कराये जा रहे हैं|

२- किसानों को सिंचाई सम्बन्धी सुविधाएं देने के लिए प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना चलाई गयी है|

३- किसानों को उन्नत किस्म के बीज एवम खाद उपलब्ध करायी जा रही है |